IJAER/ May-June- 2024/Volume-13/Issue-3 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

महाभारतकाल में नारी सामाजिक स्थिति – एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ० सुमन शर्मा
सहायक आचार्य (इतिहास)
श्री अग्रसेन महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
भरतपुर (राजस्थान)

महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित महाभारत महाकाव्य को भारतीय साहित्यिक ग्रन्थों में महत्त्वपूर्ण, सर्वप्रधान काव्य, सर्वदर्शनों का सार, स्मृति, इतिहास और चरित्र–चित्रण की खान तथा पंचम वेद के रूप में मान्यता प्राप्त है। यह पुराण पूर्ण चन्द्रमा के समान प्रकाशमान एवं देदीप्यमान है, जो मनुष्यों की बुद्धि रूपी कुमुदिनी को प्रकाशित करता है।[1] महाभारत में 18 पर्व तथा एक लाख से अधिक श्लोक[2] विशालकाय काव्य होने के कारण इसे प्राचीन भारतवर्ष का विश्वकोष कहा जा सकता है।

महाभारतकाल में कन्या को पुत्र के समान माना है।[3] पुत्र के समान ही कन्या की रक्षा व उसे प्रसन्न रखना माता–पिता का दायित्व था उदाहरणार्थ शुक्राचार्य ने अपनी पुत्री देवयानी की रक्षा[4] के लिए तथा उसे प्रसन्न[5] करने के लिए अपने प्राण दाव पर लगा दिए। कन्या भी अपने कुल के कल्याण के लिए आत्म–त्याग कर देती थी। वृषपर्वन् की पुत्री शर्मिष्ठा ने पिता की आज्ञा से कुलहित के लिए आजीवन देवयानी की दासी बनना स्वीकार किया।[6] महाभारत के एक प्रकरण में एक चक्रानगरी के ब्राह्मण की कन्या ने परिवार की रक्षा के लिए वक राक्षस हेतु भोजन बनना स्वीकार किया।[7] इसके विपरीत एक स्थान पर पुत्री को दुःख का कारण माना है।[8]

विवाह से पूर्व कन्या द्वारा समागम करने से कन्यात्व समाप्त हो जाता है किन्तु कुन्ती[9] सत्यवती[10] और द्रोपदी[11] आदि ने समागमों के पश्चात् पुनः कन्यात्व प्राप्त किया। महाभारत में कहा गया है कि गर्भधारण करने से कन्या दूषित हो जाती है[12] अतः कुन्ती, सत्यवती और द्रोपदी को शुद्ध किया गया।

महाभारत में कन्या विवाह के सन्दर्भ में वर्णित है कि तीस वर्ष का पुरूष दस वर्ष की कन्या अथवा इक्कीस वर्ष का पुरूष, सात वर्ष की कुमारी से विवाह करें।[13] ऋतुमती होने के पश्चात् तीन वर्ष तक कन्या अपने विवाह की प्रतिक्षा करें, चौथे वर्ष में वह स्वयं अपना पति चुन सकती है।[14] साथ ही जिस कन्या के पिता अथवा भाई न हो उसके साथ कभी विवाह नहीं करना चाहिये, क्योंकि वह पुत्रिका–धर्मवाली मानी जाती है।[15] कन्या सुयोग्य तथा उत्तम वर को देनी चाहिए।[16] कन्या विक्रय को दोष माना गया है। जीविका चलाने के लिए कन्या को बेचना[17] तथा कन्या का बलपूर्वक उपयोग[18] करने वाले मनुष्य निकृष्ट नरक में गिरते है। महाभारत

में आठ प्रकार के विवाहों का उल्लेख है। जिनमें असुर, राक्षस व पैशाच विवाह को पापमय[19] तथा ब्रह्म, प्रजापत्य तथा गन्धर्व विवाह को धर्मानुकूल बताया गया।[20] राजा शल्य ने भीष्म से कन्या–धन लेकर अपनी बहिन माद्री का पाण्डु से आसुर–विवाह करवाया।[21] सुभद्रा–अर्जुन[22] तथा अम्बिका–विचित्रवीर्य[23] के विवाह राक्षस विवाह के दृष्टान्त है। स्वयंवर विवाह प्रथा का प्रचलन इस बात का द्योतक है कि कन्या को अपना पति चुनने का अधिकार था। महाभारत में कुन्ती ने स्वयंवर[24] तथा आदिपर्व के स्वयंवर पर्व में द्रोपदी के स्वयंवर का विस्तृत वर्णन किया है। अम्बा, अम्बिका तथा अम्बालिका के विवाह के लिए उनके पिता काशीराज ने स्वयंवर का आयोजन किया था।[25] धृतराष्ट्र का वैश्य जाति की कन्या से विवाह अनुलोम विवाह का उदाहरण है।[26] महाभारत में विवाह संस्कार में कन्यादान की विधि व महत्त्व का भी उल्लेख है।[27] बहुपत्नी प्रथा का प्रचलन था। विचित्रवीर्य, धृतराष्ट्र, पाण्डु तथा अर्जुन के एक से अधिक पत्नियाँ थी। पुरूष एक से अधिक स्त्रियों से विवाह कर सकते है लेकिन स्त्रियों के लिए एक से अधिक पुरूषों से विवाह करना बड़ा भारी पाप है।[28] अपवादस्वरूप द्रोपदी के पाँच पति होने का उल्लेख है।[29]

महाभारत के अनुसार स्त्रियाँ घर की लक्ष्मी है ये आदर योग्य तथा घर की शोभा है अतः स्त्रियों की रक्षा करनी चाहिए।[30] विदुरजी कहते है कि पुरूषों को स्त्रियों से मधुर वचन बोलने चाहिए।[31] शकुन्तला अपने पति दुष्यन्त को पत्नी का महत्त्व इन शब्दों में प्रतिपादित करती है–पत्नी पुरूष का आधा अंग है, श्रेष्ठ मित्र है, धर्म, अर्थ तथा काम का मूल है, संसार–सागर में तैरने का साधन पत्नी ही है। जो पुरूष सपत्नीक है वे यज्ञ करने वाले, सच्चे गृहस्थ, सुखी तथा लक्ष्मी से सम्पन्न होते है। पत्नी एकान्त में प्रियंवदा संगिनी धर्म कार्यों में पिता के समान पति की हितैषी, संकट के समय माता की भाँति दुःखों का निवारण करने वाली होती है। जिसके पत्नी है वही विश्वसनीय है, स्त्री ही पुरूष की श्रेष्ठगति है। जैसे धूप से तपे हुए जीव जल में स्नानकर लेने पर शान्ति का अनुभव करते है, उसी प्रकार जो पुरूष मानसिक दुःख व रोगों से पीड़ित है, वे अपनी पत्नी के समीप होने पर आनन्द का अनुभव करते है। कुपित होने पर भी भार्या के साथ अप्रिय बर्ताव नहीं करना चाहिए क्योंकि रति, प्रीति और धर्म पत्नी के ही अधीन है। ऋषियों में भी ऐसी कोई शक्ति नहीं है कि बिना स्त्री के सन्तान उत्पन्न कर सकें। पत्नी ही घर है, पत्नी के बिना घर जंगल के समान है।[32] जिसके घर में प्रिय वचन बोलने वाली भार्या नहीं है, उसे तो वन में चले जाना चाहिए क्योंकि उसके लिए जैसा घर है, वैसा ही वन।[33] इस संसार में पति के लिए पत्नी के समान कोई बन्धु, कोई आश्रय और धर्मसंग्रह में सहायक कोई दूसरा नहीं है।[34] पुरूष की प्रधान सम्पत्ति उसकी पत्नी को ही कहा गया है।[35] स्त्रियों को संतुष्ट रखना तथा गृहस्थ धर्म का पालन करना 'तीर्थ' माना गया है।[36] महाभारत के अनुशासन पर्व के अध्याय एक सौ तेईस शाण्डिली और

सुमना के संवाद श्लोकों (9–20तक) में पतिव्रता स्त्रियों के कर्त्तव्यों का विषद वर्णन पाया जाता है। नारी के विभिन्न रूपों में माता का स्थान सर्वोच्च है। माता का स्थान गुरू से भी उच्च है।[37] युधिष्ठिर ने माता को समस्त गुरूओं में परमगुरू कहा है।[38] माता के प्रति जो मन, वाणी और कर्म द्वारा द्रोह करते है, उन्हें भ्रूणहत्या से भी अधिक पाप लगता है।[39]

महाभारत के आदिपर्व में **सतीप्रथा** का स्पष्ट वर्णन है। उदाहरणार्थ माद्री अपने पति के शव के साथ सती हुई[40] किन्तु कई उदाहरण ऐसे भी है जहाँ स्त्रियों ने अपने पतियों की मृत्यु के बाद सतीत्व का अनुसरण नहीं किया। अभिमन्यु, घटोत्कच तथा द्रोण की पत्नियाँ सती नहीं हुई।

महाभारत में पति विहिन स्त्री के दुःखों को बताया गया है। आदिपर्व में राजा व्युषिताश्व की मृत्यु पर उसके मृत शरीर से उसकी पतिव्रता पत्नी भ्रदा विलाप करती हुई विधवा होने का दुःख व्यक्त करती है–विधवा स्त्री पति के बिना मृत्यु तुल्या है।[41] पति के न रहने पर नारी की मृत्यु हो जाय, इसी में उसका कल्याण है।[42] पतिहीन तपस्विनी नारी अपने भाई–बन्धुओं के लिए भी शोचनीय बन जाती है।[43] अनेक पुत्रों से युक्त होने पर भी विधवा स्त्री शोक में डूबी रहती है।[44] अर्थात् स्त्री के लिए पति के समान कोई रक्षक नहीं है और पति के तुल्य कोई सुख नहीं है। उसके लिए तो धन और सर्वस्व को त्यागकर पति ही एकमात्र गति है।[45] महाभारत के अनुसार पति–पत्नी के सम्बन्ध मित्रवत् होना, पत्नी का पोषण तथा सहायता करना प्रत्येक पति का पवित्र कर्त्तव्य है और जो यह नहीं करता, उसे पति कहलाने का हक नहीं था।[46] इसी कारण पति की मृत्यु पर विधवा स्वयं को अकेला एवं अनाथ समझती थी।

महाभारत काल में **नियोग प्रथा** का प्रचलन था। विचित्रवीर्य की युवावस्था में मृत्यु हो जाने से उनकी माता सत्यवती ने उनकी पत्नी अम्बिका व अम्बालिका को नियोग विधि (देवर से समागम) से पुत्र जन्म के लिए कहा।[47] नियोग विधि द्वारा अम्बिका ने धृतराष्ट्र[48] तथा अम्बालिका ने पाण्डु[49] को जन्म दिया। कुल के हित व कल्याण के लिए नियोग प्रथा को उचित माना गया।[50] महाभारत में विधवा पुनर्विवाह था लेकिन पर्दा प्रथा के कोई प्रमाण नहीं मिलते।

इस युग में स्त्रियों को कई प्रकार की सम्पत्ति प्राप्त थी। कन्या के विवाह में पिता, भाई द्वारा दिए गए अनेकों उपहार आदि कन्या धन होता था। माता के धन पर कन्या का ही अधिकार होता था। अतः जिसके कोई पुत्र नहीं होता है, उसकी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी दोहित्र ही है।[51] अनुशासन पर्व में भीष्म पितामह युधिष्ठिर से कहते है कि पिता के धन का अधिकारी पुत्र के रहते हुए दूसरा कोई कैसे हो सकता है।[52] पति द्वारा पत्नी को धन का जो हिस्सा दिया जाता है वह स्त्रीधन होता है। जिस पर केवल उसी का अधिकार होता

है, यह धन पुत्र को नहीं लेना चाहिए।[53] इस काल में पति–पत्नी को अपनी चल सम्पत्ति समझता था, इसलिए युधिष्ठिर ने द्रोपदी को जुएं में दांव पर लगा दिया था।[54]

महाभारत में अनेक स्थानों पर गणिका का उल्लेख मिलता है। वनपर्व में गणिका द्वारा ऋष्यश्रृङ्ग की तपस्या में व्यवधान डालने व लुभाने का विशद वर्णन है। शान्तिपर्व में राजा जनक द्वारा पिंगला नाम गणिका को गुरू मानने का उल्लेख है।[55] युधिष्ठिर के यज्ञ के लिए राजा द्रुपद चौदह हजार दासियाँ, अवन्ती नरेश द्वारा दस हजार दासियाँ, तथा कार्पासिक देश की एक लाख दासियाँ भेंट की गई।

महाभारत के धर्मज्ञ विद्वानों ने धर्म निर्णय के प्रसंग में नारी को अवध्य बताया है।[56] किसी भी स्थिति में नारी का वध नहीं किया जा सकता है। स्त्री हत्या करने वाले को परलोक में दुर्गति प्राप्त होती है।[57] स्त्री हत्या ऐसा महापाप है जिसका प्रायश्चित भी नहीं हो सकता।[58]

महाभारत काल में स्त्रियों को बहुत सम्मान प्राप्त था परन्तु स्त्री के प्रतिहीन विचारों की कमी नहीं थी। महाभारत में कहा गया है कि यदि कोई सौ जिह्वा वाला हो, वह सौ वर्षों तक जीवित रहे और उसे कोई अन्य कार्य भी न हो, तो भी स्त्रियों के दोष बिना पूरे कहे ही मर जाएगा।[59] युधिष्ठिर ने स्त्रियों को सारे दोषों की जड़ बताया है।[60] अप्सरा पंचचूड़ा देवर्षि नारद को स्त्री स्वभाव का वर्णन करते हुए कहती है कि इस संसार मे कोई भी पुरूष स्त्रियों के लिए अगम्य नहीं है।[61] वे कुबड़, अन्धे, गूँगे तथा बौने सभी के साथ संयुक्त हो जाती है।[62] स्त्रियों में सबसे बड़ा पातक है कि वे पापी पुरूष को भी स्वीकार कर लेती है।[63] मर्यादा रहित स्त्री पति के निकट मर्यादा में तभी रहती है। जब परिजनों का भय हो तथा अन्य दूसरे चाहने वाले पुरूषों का अभाव हो।[64] जिस प्रकार ईंधन से अग्नि, नदियों से समुद्र तथा समस्त भूतों से मृत्यु तृप्त नहीं होती उसी प्रकार स्त्रियाँ पुरूषों से कभी तृप्त नहीं होती।[65] जैसे गायें नयी–नयी घास चरती है, वैसे ही नारियाँ नये–नये पुरूष को अपनाती रहती है।[66] स्त्रियों से बढ़कर दूसरा कोई पापी नहीं है,[67] इसकी समानता यमराज, मृत्यु, पाताल, बड़वानल, छुरी के धार, विष तथा सर्प से की है।[68] भीष्म का मत है ब्रह्मा स्वयं नारी की रक्षा नहीं कर सकता तो साधारण मनुष्य कैसे कर सकता है।[69] वचन से वध से, बन्धनों से और अनेक क्लेश देकर भी स्त्री की रक्षा नहीं की जा सकती क्योंकि वे सदा असंयमशील होती है।[70] पितामाह भीष्म युधिष्ठिर से कहते है कि सृष्टि के प्रारम्भ में सभी स्त्रियाँ साध्वी ही थी,[71] लेकिन स्वर्ग के देवताओं के कहने पर ब्रह्मा/प्रजापति ने मनुष्यों को मोह में डालने के लिए कृत्या रूप नारियों की सृष्टि की।[72]

सन्दर्भ–

[1] पुराणपूर्णचन्द्रेण श्रुतिज्योत्स्नाः प्रकाशिता।नृबुद्धिकैरवाणां च कृतमेतत् प्रकाशनम्।,महाभारत,आदिपर्व, /1/86

[2] एकं शतसहस्त्रं तु मुयोत्कं वै निबोधत।, वही, /1/109

[3] यथैवात्मा तथा पुत्रः पुत्रेण दुहिता समा।, वही, अनुशासन पर्व,/45/11

[4] समुद्र प्रविशध्वं वा दिशो वा इवतासुराः। दुहितुर्नाप्रियं सोहुं शक्तोऽहं दयिता हि में।।, वही, आदिपर्व 1/80/9

[5] प्रसाद्यतां देवयानी जीवितं यत्र मे स्थितम्। योगक्षेम करस्तेऽहमिन्द्रस्येव बृहस्पतिः।।,महाभारत, आदिपर्व/80/10

[6] अहं दासीसहस्त्रेण दासी ते परिचारिका।, वही, /80/22

[7] अथवाहं करिष्यामिं कुलस्यास्य विमोचनम्।फलसंस्था भविष्यति कृत्वा कर्मसुदुष्करम्। वही/158/13

[8] आत्मा पुत्रः सखा भार्या कृच्छं तु दुहिता किल।, वही, /158/13

[9] प्रादाच्च तस्यै कन्यात्वं पुनः परमद्युति।, वही, /110/20

[10] ततो मामाह स मुनि गर्भमुत्सृय मामकम्। द्वीपेऽस्या एवं सरितः कन्यैव त्वं भविष्यसि।, वही/104/13

[11] महानुभावा किल सा सुमध्ययमा बभूव कन्यैव गते गतिऽहानि।।, वही,/197/14

[12] गर्भेण दुष्यते कन्या।, वही, अनुशासन पर्व, /36/17

[13] त्रिशद्वर्षो दशवर्षो भार्यो विन्देत नाग्निकाम्। एकविंशतिवर्षो वा सप्तवर्षामवाप्नुयायत्।,वही/44/14

[14] त्रीणी वर्षाण्युदीक्षेत कन्या ऋतुमती सती। चतुर्थे त्वथ सम्प्राप्ते स्वयं भर्तारमर्जयेत्।।,वही/44/16

[15] यस्यास्तु न भेवद् भ्रातापिता वा भरतर्षम।नोपयच्छेत तां जातु पुत्रिका धर्मिणी हिसा।, महाभारत, अनुशासनपर्व /44/15,

[16] यत्रेष्टं तत्र देया स्यान्नात्र कार्या विचारणा।, वही, /44/51

[17] यो मनुष्यः स्वकं पुत्रं विक्रीय धनमिच्छति। कन्यां वा जीविताभाय यः शुल्केन प्रयच्छति। सप्तावरे महाघोरे निरये कालसाहवे। स्वेदं मूत्रं पुरीषं च तस्मिन् मूढः समश्नुते।।, महाभारत, अनुशासन पर्व, /45/18–19

[18] वश्यां कुमारी बलतो ये तां समुपमुञजते। एते पापस्य कर्तारस्तमस्यन्धे च शेरते।।,वही/45/22

[19] पैशाचश्वासुरश्चैव न कर्त्तव्योकथंचन।, वही/44/9

[20] बह्म् क्षात्रोऽय गान्धर्व एते धर्म्या नरर्षभ।, वही, /44/10

[21] तत् प्रगृह्य धनं सर्वे शल्यः सम्प्रीतमानसः। ददौ तां समलंकृत्य स्वसारं कौरवर्षये।।,वही, आदिपर्व, /112/16

[22] उचितश्चैव सम्बन्धः सुभद्रां च यशास्विनीम्।एष चापीदृशः पार्थः प्रसह्य हृतवानिति।।,वही,/220/6

[23] ता सर्वगुणसम्पन्ना भ्राता भ्रात्रे यवीयसे। भीष्मो विचित्रवीर्याय प्रददौ विक्रमाहृताः ।।,वही,/102/58

[24] ततः सा कुन्तिभोजेन राज्ञाऽऽहूय नराधिपान्। पित्रा स्वयंवरे दन्ता दुहिता राजनत्तम।, आदिपर्व, /111/3

[25] अथ काशिपते भीष्मः कन्यास्तिस्त्रोऽप्सरोपमाः। शुश्राव सहिता राजन वृण्वाना वैस्वयंवरम्।।, वही/102/3

[26] धृतराष्ट्रस्य वैश्यायामेकश्चापि शतात् परः।।, वही/114/1

[27] पाणिग्रहणमन्त्राणां निष्ठा स्यात् सप्तमे पदे। पाणिग्रहस्य भार्या स्याद् यस्य चाद्भिःप्रदीयते। इति देयं वदन्त्यष्त्र त एनं निश्चयं विदुः।।, वही, अनुशासन पर्व/44/55

[28] न चाप्यधर्म कल्याण बहुपत्नीकृतां नृणाम्। स्त्रीणाम धर्मः सुमहान् भर्तुः पूर्वस्य लङ्घने।।, वही, आदिपर्व, /157/36

[29] सर्वेषां महिषी राजन् द्रोपदी नो भविष्यति।, वही, आदिपर्व, /194/23

[30] पूजनीया महाभागाः पुण्याश्च गृहदीप्तयः। स्त्रियः श्रियो गृहस्योक्तास्तस्माद् रक्ष्या विशेषतः।।, वही, उद्योगपर्व, /38/11

[31] श्लक्ष्णो मधुर वाक्स्त्रीणां।, वही, उद्योगपर्व, /38/10

[32] न गृहं गृहामित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते। गृहं तु गृहिणीहीनमरण्यसद्शं मतम्।।, महाभारत, शान्ति पर्व/144/6

[33] यस्य भार्या गृहे नास्ति साध्वी च प्रियवादिनी। अरण्यं येन गन्तव्यं यथारणयं तथा गृहम्।।, वही /144/17
[34] नास्ति भार्यासमोबन्धुर्नास्ति भार्यासमा गतिः। नास्ति भार्यासमो लोके सहायो धर्मसंग्रहे।।, वही,/144/16
[35] भार्या हि परमो ह्यर्थः पुरूषस्त्रेह पठ्यते।, वही, /144/14
[36] दाराणां तोषणं तीर्थे गार्हस्थ्यं तीर्थमुच्यते।।, वही, अश्वमेधिक पर्व, /92/953
[37] नास्ति मातृसमो गुरूः। महाभारत, अनुशासन पर्व, /106/65
[38] गुरूणां चैव सर्वेषां माता परम को गुरूः।।, वही, आदिपर्व, /195/16
[39] उपाध्यायं पितरं मातरं च येऽभिद्रह्यन्ते मनसा कर्मणा वा। तेषां पापं भ्रूणहत्याविशिष्टं तस्मान्नान्यः पापकृदासिति लोके।। वही, शान्तिपर्व /108/30
[40] इत्युक्त्वा तं चिताग्रिस्थं धर्मपत्नी नरर्षभम्। मद्रराजसुता तूर्णमन्वारोहद् यशास्विनी।। वही, आदिपर्व, /124/31
[41] नारी परमधर्मज्ञ सर्वा भर्तृविनाकृता। पति बिना जीवति या न सा जीवति दुःखिता।।वही/120/21
[42] पति बिना मृतं श्रेयो नार्याः क्षत्रियपुड़ग च। वही, /120/22
[43] शोच्या भवति बन्धूवां पतिहीना तपास्विनी। वही, शान्तिपर्व, /148/3
[44] सर्वापि विधवा नारी बहुपुत्रापि शोचते। वही, /148/2
[45] नास्ति भर्तृसमो नाथो नास्ति भर्तृसमं सुखम्। विसृज्य धनसर्वस्वं भर्ता वै शरणं स्त्रियाः।।, महाभारत, शान्तिपर्व,/148/7
[46] भरणाद्धि स्त्रियों भर्ताः पालनाद्विपतिः स्मृतः। गुणास्यास्य निवृतौ तु न भर्ता न पुनःपतिः।।, वही/27/37
[47] कौसल्ये देवरस्तेऽस्ति सोऽद्य त्वानुप्रवेक्ष्यति।अप्रमन्ता प्रतीक्षनं निशीथे ह्यगामिष्यति।।,आदिपर्व/105/2
[48] सापि कालेन कौसल्या सुषुवेऽन्धं तमात्मजम्।, वही, /105/13
[49] ततः कुमारं सा देवी प्राप्तकालमजीजनत्।, वही, /105/21
[50] तदिदं धर्मयुक्तं च हितंचैवकुलस्य नः।।, वही, /104/22
[51] मातुश्व यौतकं यत् स्यात् कुमारीभाग एवं सः। दौहित्र एवं तद् रिक्थमपुत्रस्य पितुर्हरेत्।।, अनुशासन पर्व/45/12
[52] तस्यामात्मनि तिष्ठन्त्यां कथमन्यो धनं हरेत्।, वही, /45/11
[53] स्त्रीणां तु पतिदायाद्यमुपभोगफलं स्मृतम्। नापहारं स्त्रियः वुर्युः पतिविन्तात कथंचन।।,वही/47/24
[54] तथैवंविधया राजन् पाञचाल्याहं सुमध्यया। ग्लहं दीव्यामि चार्वडगया द्रौपद्या हन्त सौबल।। सभापर्व /65/39
[55] पिडगला कुररः सर्पः सारडगान्वेषणं वने। इषुकारः कुमारी च पेडेते गुरवो मम।।,वही/178/7
[56] अवध्यां स्त्रियमित्याहुर्धर्मज्ञा धर्मनिश्चये।, वही, आदिपर्व/158/31
[57] स्त्रियं हत्वा तु दुर्वाद्वियर्मस्य विषमं गतः। बहून् क्लेशान्समासाद्य संसारांश्चद्यैव विंशतिम्।।, महाभारत, अनुशासन पर्व/111/117
[58] मित्रद्रुहः कृतघ्नस्य स्त्रीघ्नस्य गुरूघातिनः। चतुर्णो वयमेतेषां निष्कृति नानुशुश्रुम।।, वही, शान्ति पर्व, /108/32
[59] यदि जिह्वा सहस्त्रं स्थाजीवेच्च शरदा शतम्। अनन्य कर्मा स्त्री दोषाननुक्त्वा निधनं ब्रजेत।।, वही, /74/9
[60] स्त्रियो हि मूलं दोषाणां लघुचिन्ता हि ताः स्मृताः।।, वही, अनुशासन,/38/1
[61] स्त्रीणामगम्योलोकेऽस्मिन् नास्ति कश्चिन्महामुने।।, वही, /38/21
[62] अपि ताः सम्प्रसज्जन्ते कुब्जान्धवडवामनैः।, वही, /38/20
[63] असद्वर्मस्त्वयं स्त्रीणामस्माकं भवति प्रभो। पापीयसो नरान् यद्वै लज्जां त्यक्तवा मजामछदे।।, वही, /38/14

[64] अनथिंत्वान्मनुष्याणां भयात् परिजनस्य च। मर्यादा याम मर्यादाः स्त्रियाष्ठिन्ति भर्तुषु।। वही/38/16

[65] नाग्निस्तृष्यति काष्ठानां नापगानां महोदधि। नान्तक सर्वभूतानां न पुंसां वामलोचनाः।, अनुशासन पर्व/38/25

[66] गावो नवतृणानीव गह्वन्त्येता नवं नवम्।, वही, /39/6

[67] न स्त्रीभ्यः किश्चिदन्यद् वै पापीयस्तरमास्ति वै।, वही, /38/12

[68] अन्तकः पवनो मृत्युः पातालं वडवामुखम। क्षुरधारा विषं सर्पो वहिरित्येकतः स्त्रियः।।,वही/38/29

[69] न तासां रक्षणं शक्यं कर्तुं पुंसां कथवचन। अपि विश्वकृता तात कुतस्तु पुरूषैरिह।।,अनुशासन पर्व /40/13

[70] वाचा च वधबन्धैस्तथा। न शक्या रक्षितुं नार्यस्ता हि नित्यमंसंमता।।, वही/40/14

[71] पूर्वसर्गे तु कौन्तेय साध्वो नार्य इहाभवन्।।, वही /40/7

[72] तेषामर्न्गतं ज्ञात्वा देवानां स पितामहः। मानवानां प्रमोहार्थे कृत्या नार्योऽसृजत् प्रभुः।।,वही/40/6